# मिशन शिक्षण संवाद

# बाल सुधा

वन्दना यादव (स०अ०)
प्रा० वि० चन्दवक, डोभी, जौनपुर

# तितली रानी

तितली रानी, तितली रानी,
उड़ती फिरती है वह मनमानी।
कभी इधर, कभी उधर जाए,
फूलों पर मंडराती वह जानी।।

रंग-बिरंगे सुन्दर पंखों वाली,
पलक झपकते ओझल हो जाती।
फूलों से रस पी-पी कर वह,
सरपट देखो दौड़ लगाती।।

नन्हीं परी वह उड़ती फिरती,
हौसले में रख उड़ान बताती।
इठलाती मधुकर साथी संग,
कभी किसी के हाथ ना आती।।

# कोयल

कुहू-कुहू कर गीत गाती है,
कोयल मीठे गीत सुनाती है।
ऋतु बंसत है प्यारा इसको,
प्रियसी सी वह शर्माती है।।

तन काला मन सुन्दर है,
मधुर वचन मन हर्षाती है।
कर्कश वाणी घाव करें,
मधुर बोलो समझाती है।।

# घोड़ा आया

घोड़ा आया, देखो घोड़ा आया,
घूमने जब मैं अलमोड़ा आया ।
इस पर चढ़ कर सैर करें हम,
करने सवारी मैं दोड़ा आया।।

कितना तेज दौड़ता घोड़ा,
शाकाहारी है  यह थोड़ा।
इसकी सवारी मुझे है भाती,
सरपट दौड़े लम्बा-चौड़ा ।।

# बिल्ली रानी

04

बिल्ली रानी, बिल्ली रानी,
घर में घुसकर करे मनमानी।
दूध मलाई खा जाती है ,
भाता नहीं, उसे है पानी।।

चूहै मामा को, आता देख,
छुप गई, बनी बड़ी सयानी।
चकमा देकर भागें मामा,
हाथ मले, हुई उसे हैरानी।।

पकड़ न पायी, जब शिकार,
बोली बूढ़ी हुई, गई जवानी।
आगे-पीछे में भागूँ कैसे?
मन ही मन में, बहुत पछतानी।।

# कबूतर

आसमान में मँडराये कबूतर,
देखो कहाँ से आए कबूतर।
पेड़, छत, मुंडेर पर हैं रहते,
धवल पंख फैलाये कबूतर।।

गुटर-गूँ गुटर-गूँ की शोर करें,
संगी साथी संग लाए कबूतर।
हौसले संग उड़ान है भरते,
दाना चुग-चुग खाये कबूतर।।

जब कभी, मुश्किल में फँसते,
बच्चों बहुत, चिल्लाये कबूतर ।
खतरनाक मांझे से, न पतंग उड़ाना,
मंझे में फंसकर, तड़फड़ाये कबूतर।।

# गिलहरी

प्यारी-प्यारी एक गिलहरी,
छत पर रोज आये गिलहरी।
दौड़ लगाती  खूब पेड़ पर,
खूब हर्षाती हमें गिलहरी।।

ऊपर-नीचे घुमें  दाएँ-बाएँ,
परेड लगाती रोज गिलहरी।
आहट मिलती जरा उसे तो,
छत पर छुप जाती गिलहरी।।

# गाय

गाय, गईया या गौ माता है,
दूध अमृत कहा जाता है ।
वैदिक काल से पूंजी जाती,
जगत जननी कहा जाता है।।

सुन्दर, सीधी पालतू गाय,
घास, भूसा, हरा चारा खाय।
काली, भूरी, सफेद रंग की होती,
गोबर से, जाते जैविक खाद बनाये ।।

चार पैर, दो आँख, एक पूछ वाली,
दो कानों से सुनती गीत मतवाली।
दो सींग इसके, नुकीले होते,
कई प्रजातियों में पाई जाने वाली।।

# चींटी रानी




बहुत सयानी  चींटी रानी,
मेहनत करती, रहे मनमानी।
मीठा इसको बढ़ा है भाता,
गुड देखकर हो जाती दीवानी।।

छोटी चींटी के  है काम बड़े,
मेहनत से वो  बोझ बड़े-बड़े।
दिल में ठानें जो काम करना,
हर मुश्किल से जमकर लड़े।।

# गौरैया

चूँ-चूँ करती रहती गौरैया,
जैसे नाचे ता-ता थैईया ।
फूँदक-फुँदक नाच दिखाये,
देखो दीदी, देखो भैया ।।

फुर्र-फुर्र  कर उड़ जाती है
चोंच में  अपने दाना लाती है।
कभी ना रूकती, कभी न थकती,
पंजे में जैसे, लगे हो पहिया।।

किसी के नहीं आती है।
बच्चों के मन को भाती है।
पास हमारे तुम आ जाओ,
तुम्हें खिलायेंगे  हम लईया।।

# बंदरिया

एक बंदरिया  पहन घघरिया,
नाच दिखाए  बीच बजरिया।
ठुमक-ठुमक के ठुमका लगाये,
नाचे खूब, लचकाये कमरिया।।

घर-घर जाकर आवाज लगाए
गये हैं परदेस, मेरे साँवरिया।
मन मसोस कर रह जाती है,
वियोगी बन, भटके बावरिया।।

# शेर

शेर जंगल का राजा है शेर,
बलशाली पशु होता है शेर।
क्षुधा मिटाने को शिकार करता,
तेज धावक होता है शेर।।

एक स्तनधारी जानवर है शेर,
बहादुरी का पर्याय होता शेर ।
भारत के अशोक स्तंभ में,
राष्ट्रीय प्रतीक है  चार शेर।।

# हिरन

आधा कबरा, आधा काला,
देखा हमने हिरण मतवाला।
सुनहरे उसकी काया होती,
हरा-हरा चारा खाने वाला।।

लम्बी लम्बी टांगे डाले,
तेज रफ्तार में दौड़े भागे।
तेज नुकीली सींग है उसकी,
मोहित होता हर देखने वाला।।

# चिड़ियाँ

डाल-डाल मडराती चिड़ियाँ,
चहक-चहक गीत सुनाती चिड़ियाँ।
इधर-उधर से तिनका लाती,
सुन्दर घोंसला बनाते चिड़ियाँ।।

हुआ प्रभात जगाती चिड़ियाँ
दाना चुन-चुन खाती चिड़ियाँ।
खुले आकाश में उड़ती है,
सबका मन हर्षाती चिड़ियाँ।।

# खरगोश

श्वेत रंग का प्यारा दोस्त,
मिर्ची, गाजर खाता है ।
उछल-कूद करता रहता,
प्यार सभी पर लुटाता है।।

छोटी आँखें, कान बड़े,
शर्मीले होते खरगोश बड़े।
ये शुद्ध शाकाहारी होते,
कोमल रोये रहते खड़े।।

# मोर

सावन जब जब आता है,
मोर नाच-नाच दिखाता है।
कितने सुन्दरपंख है इसके,
मस्त मगन जब फैलाता है।।

वन, बाग उपवन शोभित होते,
सिर पर कलगी प्यारी लगती,
मन मुग्ध हो जाता देख कर,
कूक इसकी न्यारी लगती।।

पतली लम्बी गर्दन इसकी,
पक्षियों का राजा होता मोर।
अद्भुत आकर्षण का केंद्र है,
पक्षियों का राजा होता मोर।।

भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर
वैदिक ग्रंथों श्रेष्ठ  माना गया।
एक शाकाहारी पक्षी है यह,
राजमुकुट  से इसे सवारा गया।।

# भालू

भालू मामा  चले बाजार,
जेब में लेकर पैसे चार।
टाफ़ी खरीदे या बिस्कुट ले,
समझ ना आए हुए लाचार।।

आम देख कर हर्षे अपार,
बनाना चाहे उसका अचार।
मिला नहीं, वह चार पैसे में,
घर को लौटें, वह मन मार।।

# बंदर मामा

बंदर मामा, बंदर मामा,
उछल कूद करते हो ड्रामा।
साख केसरी तुम कहलाते,
करतब दिखाते पहन पजामा।।

कभी इधर कभी उधर जाये,
बंदर घुड़की सब को दिखाये।
डाली-डाली घूमें मस्ती में,
केला छील-छील कर खाये।।

तरह-तरह के करतब दिखाये,
हाथ किसी के, ये ना आये।
खो-खो कर के दाँत निकाले,
दूर से ही यह सब को डराये।।

# हाथी

जंगल-जंगल जाता हाथी,
मस्ती मौज मनाता हाथी।
विशाल इसकी काया देखो,
ज्यादा भोजन खाता हाथी।।

गजराज, ऐरावत, कहते इसको,
शुभ में, पूजा जाता जिसको।
डेढ़ कोश से, यह गंध सूंघ लेता,
राजा शान समझते, रखना इसको।।

सूँड से पानी, भोजन खाता,
बैठ महावत, बाजार घुमाता।
आँखें छोटी, होते कान बड़े,
क्रौध में सब कुछ, रौदता जाता।।

# कछुआ

जल-थल में रहता कछुआ,
कवच डाल पहनता कछुआ।
100 वर्षों तक जीवित रहता,
बिना दाँत का होता कछुआ।।

'टेस्टूडनीज' है वैज्ञानिक नाम,
सांस लेते उभयचरों के समान।
चलता है कछुआ, धीमी चाल,
अंधेरे में, रंगों की रखता पहचान।।

# बगुला

पक्षियों का एक,
प्रजाति होता है बगुला।
नदी, झील, समुद्र के,
किनारे रहता है बगुला।।

बड़ा चलाकी से करता है,
मछलियों का शिकार।
झपट्टा मारने में माहिर,
उड़ने को रहता सदा तैयार।।

# डॉल्फिन

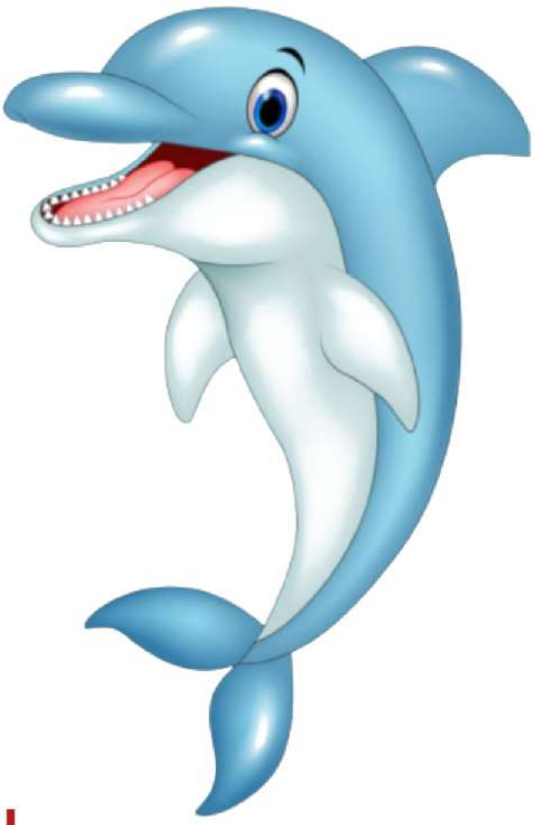

डॉल्फिन नदी, सागर में रहती,
पानी के धार संग में बहती।
धमा-चौकड़ी,धमाल मचाये,
पानी में वे करतब दिखाए।।

आँख खोल कर सो जाती है,
सागर में खूब गोता लगाती ।
बहुत बड़ी  यह होती बच्चों,
धीरे बोलो तब भी, सुन लेती है।।

# सांप

रेंगने वाला सरीसृप है सांप,
मुँह में रखता  विष है सांप।
कान नहीं इसके है होते,
आँखें खुली रखते हैं साप।।

जल-थल में, साप है पाये जाते,
जहर से उनके, दवा बनाई जाते।
मैढक,  छिपकली, पक्षी निगलते,
कम भोजन में भी, जीवित रह पाते।।

# पतंगा कीट

तितली जैसा एक कीट होता,
शलभ, पतंगा या परवाना कहते।
रंग-बिरंगे अलग श्रेणी के पतंगे,
रात में अधिक सक्रिय है होते।।

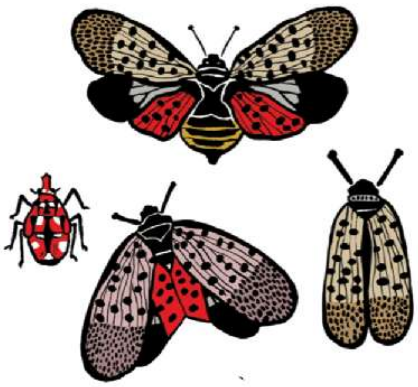

आग व रोशनी से होता उन्हें आकर्षण,
उड़ते समय चाँद की, रोशनी का प्रयोग करते हैं।
मादा पतंगे के शरीर से इंफ्रारेड उत्पन्न होते,
अवरक्त  प्रकाशक से आकर्षित वह होते हैं।।

# मगरमच्छ

एक सरीसृप होता मगरमच्छ,
जमीन, पानी पर रहता है मगरमच्छ।
अफ्रीका, एशिया में पाया जाता,
मांसाहारी जानवर है मगरमगर।।

खुरदरी, पपड़ीदार त्वचा व पंजे,
छोटे पैर का शिकारी मगरमच्छ।
मछली,मेंढक, पक्षियों को खाता,
सागर, नदी में रहता मगरमच्छ।।

# जलचर

जल में मछली, झींगा और
मेंढक,जैसे जीव है रहते
पानी में जीवित रहते जो,
जलचर उनको है कहते ।।

जल में केकड़ा, सील
इसमें मस्ती है करते ।
मगरमच्छ, ऑक्टोपस
सब शार्क से है डरते ।।

ओरका और जेलीफ़िश,
जल में ही चमका करते ।
जल की दुनिया अचरज भरी,
आओ हम सब शेर है करते।।

डॉल्फिन, मछली बुलाती है,
उछल-कूद, करतब दिखाती है।
समुद्र में मिले सीपऔर मोती,
गोताखोर खोज निकाले मोती।।

# धन्यवाद आपका